15 / 12 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

एक बाबा शब्द की जादूई शक्ति से निर्विघ्न बन रामराज्य का अनुभव करना

➢➢ विश्व रुपी शोकेस की मैं, अमूल्य रत्न

➳ _ ➳ कोटो में भी कोई, कोई में भी कोई,

➳ _ ➳ मैं श्रेष्ठ भाग्य शाली आत्मा

→ दुनिया के कोने कोने से ढूंढ ढूंढ कर

→ बापदादा ने मुझे अपनाया हैं

→ सुख साधनों से किनारा कर मैं आत्मा

→ एक बाप में सहारा पा गयी हूँ

→ देख रही हूँ स्वयं को

→ बाप दादा की श्रेष्ठ नजर से

→ अपनी संपन्न स्टेज

◆ फ़रिश्ता स्वरूप को

● विश्व में सुख शांति की किरणें फैलाते

● हाहाकार के बाद

● जय जय कार के निमित्त

● मैं आत्मा

→ अपने भविष्य स्वरूप

◆ देवताई स्वरूप को

● सर्वगुण संपन्न स्टेज

→ अपने मध्य स्वरूप

◆ पूज्य स्वरूप को

● भक्त, जड़ चित्रों से

● चैतन्य देवताओं का आह्वान कर रहे है

◆ एक तरफ मेरा शक्ति रूप

● वैष्णो देवी रूप

● भक्तों की कतार लम्बी होती जा रही है

◆ दूसरी ओर पांडव शक्ति

● मेरा हनुमान महावीर रूप

→ मास्टर शक्तिदाता बन मैं आत्मा

→ सबको सद्गति का प्रसाद बाँट रही हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा देख रही हूँ वर्तमान राजनीति की हलचल

→ काम चलाऊं गर्वनमेंट

→ एक तरफ चिल्लाना

→ दूसरी तरफ धक्के से चलाना

→ हर कार्य बेमन से हो रहा हैं

◆ रामराज्य का आह्वान करते,

◆ ये प्रजा-जन

● भूख से चिल्लाते

● मंहगाई से परेशान हैं

● तन के रोगों से पीड़ित

● मन की आसक्ति से अशांत हैं

● पढ़ाई के बोझ से बोझिल बच्चें

- कुर्सी की हलचल से
- राज्य अधिकारी परेशान हैं

→ सबकी नजर मुझ टॉवर ऑफ पीस की तरफ हैं

➳ _ ➳ अपने उत्तरदायित्वों की स्मृति स्वरूप बन मैं आत्मा

➳ _ ➳ बीज स्वरूप धारण कर चल पड़ी, परमधाम की ओर

➳ _ ➳ शांति के सागर से शांति की शक्ति लेते हुए

→ शक्तियों से भरपूर होती हुई मैं आत्मा

→ ज्ञान सागर बुद्धि में समाता जा रहा हैं

→ एक बाबा शब्द की जादुई स्मृति गहरी हो रही हैं

→ मनसा के भी सभी विघ्न समाप्त हो रहे हैं

→ संकल्प और मनसा पवित्र हो रही है

→ दिव्य संस्कार जाग्रत हो रहें हैं

→ बारी बारी से सभी सतोप्रधान हो रहें हैं

◆ प्रकृति के पांचो तत्व

◆ कल्प वृक्ष की सभी आत्माएं

◆ ये सम्पूर्ण सृष्टि

- विश्वराज्यधिकारी मैं आत्मा
- एक धर्म एक राज्य सत्ता
- सम्पूर्ण सुखी प्रजाजन
- हर तरफ खुशहाली हैं
- सम्पूर्ण निरोगी कंचन काया
- संगीत चित्रकला का आनंद लेते बच्चे
- हर तरफ सुख शांति का साम्राज्य हैं
- मनसा वाचा कर्मणा निर्विघ्न हैं
- रामराज्य की गहरी अनुभूति महसूस हो रही हैं